ISSN:2583-8849

सहजोबाई

1-

प्रेम दिवाने जो भये, मन भयो चकना चूर।
छके रहे घूमत रहैं, सहजो देखि हज़ूर॥

प्रेम लटक दुर्लभ महा, पावै गुरु के ध्यान।
अजपा सुमिरण कहत हूं, उपजै केवल ज्ञान॥

अड़सठ तीरथ गुरु चरण, परवी होत अखंड।
सहजो ऐसो धामना, सकल अंड ब्रह्मंड॥

गुरुवचन हिय ले धरो, ज्यों कृपणन के दाम।
भूमिगढ़े माथे दिये, सहजो लहै न राम॥

मन में तो आनंद है, तनु बौरा सबअंग।
ना काहू के संग है, सहजो ना कोई संग॥

2-

अंत जु आए जगत् में, हरि सुमिरण के काज।
ह्यां कछु कीया और ही, नेक न आई लाज॥
नेकन आई लाज, साज सब खोटे कीन्हे।
सदा रहे अज्ञान, रामघट में नहिं चीन्हे॥
जैहौ जन्म गँवाइके, पछितावा रहि जाय।
चरणदास कहे सहिजिया, कहा कियो तनु पाय॥
इस संसार में मनुष्य का अंतिम लक्ष्य नाम सुमिरन है। उसे मनुष्य देह

3-

मैं तो खेलूं प्रभु के संग होरी रंगभरी।
जित देखूं तित रम रहौ रे सबमें व्यापक है हरी॥
सब कुछ भयो दयो सुख जनको अद्भुत लीला करी।
नाना जतन किये मिलबे के प्रीतम पाए हम घरी॥
पावत ही सब भ्रम भय भागे आवागमन छूटीलरी।
जीवन्मुक्त भयो मन मेरो व्याधा सब आशा जरी॥
अमरलोक पद फगुआ पाओ जन्म मरण विपता टली।
चरणदास गुरु किरपा कीन्हीं सहजो सब आनंद रली॥

4-

साधो भवसागरमें काल, होरी खेलई॥
भांति-भांति के रंग लिये कर करत जीवन की घात।
बूढाबाला कछू न देखै देखै दिन नहिं रात॥
निश्चय मौत लिये संग रानी नानारंग सम्हार।
बडे अभिमानी नामी सोभी लीने मार॥
सूर चंदवा भयते कांपे स्वर्ग माहिं सब देव।
तनु धारी सबही थर्राने ज्ञानी जानत भेव॥
आपन को देही नहिं माने जाने आतम सांच।
चरण दास कहै सहजो बाई ताहिन आवै आंच॥

5-

ऐसो बसंत नहीं बारबार। ते पाई मनशा देहीसार॥
यह औसर वृथा न खोव। भक्ति बीज हिय घरती बोव॥
सतसंगति को सींच नीरा। सतगुरुजी सू करो सीर॥
नीकी वार विचार देव। मरन राख याको जु सेव॥
रखवारी करिहेत हेत। जब तेरी होवै जैत जैत॥
खोट कपट पक्षी उड़ाव। मोह घास सबहीनलाव॥
सँभलै बाडी नौऊ अंग। प्रेम फूल फूले रंग॥
पुहुप गूंडिमाला बनाव। आदि पुरुष को जा चढाव॥
हो सहजो बाई चरणदास। तेरे मन की पुजवे सकल आश॥